पियूष रंजन श्रीवास्तव की कविताएं

पियूष रंजन श्रीवास्तव

आहट

दरवाजे पे
किसीकी 'आहट' ने
दस्तक दी है;
कौन हो सकता है ?
सगे-संबंधी, रिश्तेदार
या उनकी शक्ल में
कोई और;
जिसके पंजे मुझ तक या
मुझ जैसों तक ही आते हैं
दबोचने के लिए
मसलने के लिए
और न जाने क्या-क्या;
जिसकी कल्पना मात्र से
मरना अच्छा लगता है;
हाँ... मरना पसंद है मुझे
'आहट' सुनने से पहले
दरवाजा खोलने से पहले।
क्योंकि डर लगता है मुझे
चीखें सुनकर मेरी ;
कोई कान न बन्द करले
कोई आंख न बन्द करले
अपना मुँह न बन्द करले
इसीलिए... मरना पसंद है मुझे
'आहट' सुनने से पहले
दरवाजा खोलने से पहले।।

हसीं वादियाँ

ये हसीं वादियां कुछ कह रही हमसे
ना करो जुदा मुझको मुझसे,
ना पाया था, ना पाया है, ना पाओगे कभी
मुझसा जवां, मुझसा हसीं, और मुझसा दिल्लगी
अभी भी जवां हूँ तेरी महबूबा सी
अपना ले मुझे कुछ बिगड़ा नही,
जानती हूं तेरी महबूबा को पसंद नही सौतन
तो बता दे उसे निचोड़ा किसने मेरा यौवन,
इतना तो दुर्योधन भी ना गिरा था
अपनी नज़र में,
जितना तू गिर गया है
करके चिर-हरण मेरा,
अरे! तू तो मानुष है कर सकता है कुछ भी
तो कर लो ना उद्धार अपना,
अरे तू क्या करेगा उद्धार अपना
तू तो है 'उधार' मेरा,
बन जा भलमानुष अबसे
ना करो ज़ुदा मुझको मुझसे ।।

राजनीति की चाल

करते हैं वादे
जताते है चाल
चाहे मोदी, राहुल, हो या केजरीवाल
जिनके पकें हो या न पकें हो बाल
सभी ठोंके चुनाव में अपनी-अपनी ताल,
भ्रष्टाचार, गरीबी को बनाते हैं ढाल

कब तक रहेगा ये मुद्दा सालों-साल,
कहते हैं 'मुझे दे दो पाँच साल'
बदल दूंगा देश का सूरत-ए-हाल,
बीते पाँच साल, बदहाल सूरत-ए-हाल
फिर भी आकर पूछे जनता का हाल
दावों पर कहते हैं, 'था भूतकाल'
'याद नही मुझे, मैं पीला था या लाल',
इसे ही कहते हैं भईया
"राजनीति की चाल" ।।

परिंदों का आशियाँ

परिंदे आशियाँ की आशा में
उड़ चले हैं
मौसम-ए-बरसात में
रुकावटे आएंगी बहुत
कभी ओले पड़ेंगे तो
कभी तड़केंगी बिजलियां
किसीके पर काटेंगे तो
किसीकी जाएगी जान
सामना करना है आंधियो का भी
मगर डरना नही है
जब तूने लिया है ठान
आखिर होती है हौसलों से उड़ान
कुछ परिंदे उड़ते रहे
रुकावटे आती रही
संघर्ष करते रहे
आखिरकार परिंदे पहुंचे
आशियानों के जहां में
जहाँ चुनौती थी
आशियाँ चुनने की
किसीने महलों को चुना तो
किसीने वृक्षों को चुना
मगर जब बरसात आयी तो
सबको 'मूँज की छप्पर' ही भायी ।।

वो गरीब है

वो गरीब है इसलिए
कलम से पहले पकड़ता है पतवार,
वो गरीब है इसलिए
नही आता उसका रविवार।
वो गरीब है इसलिए
ना सांझ है ना ही सवेरा है,
वो गरीब इसलिए
क्या उजाला क्या अंधेरा है।
वो गरीब है इसलिए
हँस लेता है हरबार रोकर भी,
वो गरीब है इसलिए
समेट लेता है खुद को खोकर भी।
वो गरीब है इसलिए
सुंदर सपने नही सजाता है,
वो गरीब है इसलिए
दिनभर मारा फिरता है।
वो गरीब है इसलिए
परवाह नही कोई करता,
वो गरीब है इसलिए
पेट पकड़कर भूखा मरता।
वो गरीब है इसलिए
भेड़ियों के आगे बेजान है,
वो गरीब है इसलिए
उसकी बस्ती सुनसान है।।

संपर्क : ग्राम-भलुआ, पोस्ट-परसिया, जिला-देवरिया उत्तरप्रदेश harshsrivastava48@gmail.com